अलादीन का जादुई चिराग

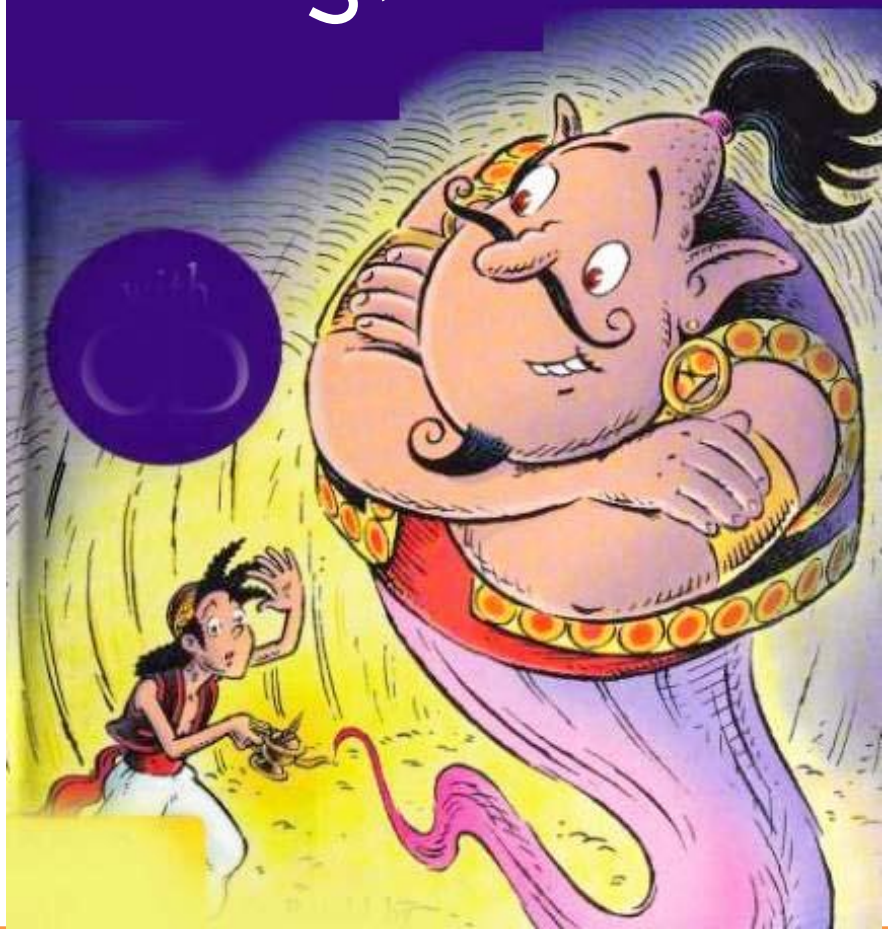

अलादीन का जादुई चिराग

एक बार अलादीन नाम का एक आलसी लड़का था. उसके पिताजी अकेले ही परिवार को चलाते थे. वो चिंता के कारण मर गए. उससे अलादीन की माँ बड़ी दुखी हुईं.

एक दिन, अलादीन हमेशा की तरह कुछ गड़बड़ कर रहा था जब एक आदमी उसके पास आया.

"अलादीन" उसने कहा. "मैं तुम्हारा चाचा अबानज़र हूँ. तुम्हारे पिता लम्बे अर्से से खोए मेरे बड़े भाई थे!"

उस शाम, नए चाचा ने खुद को रात के खाने के लिए अलादीन के घर आमंत्रित किया.

जब उन्होंने सुना कि अलादीन की कोई नौकरी नहीं है, तो उन्होंने अलादीन के लिए एक फैंसी दुकान खरीद दी.

उससे अलादीन और उसकी माँ बहुत खुश हुए. पर उन्हें इस बात का कोई अंदाज़ नहीं था कि अबानज़र वास्तव में एक दुष्ट जादूगर था.

अगले दिन, अबानज़र, अलादीन को शहर से बाहर टहलाने के लिए ले गया.

उससे घास में पत्थर से बना एक जाली का दरवाजा दिखाई दिया. अलादीन उसे देखकर हैरान हुआ. उसके चाचा जादू कर सकते थे!

"इस पत्थर के नीचे कई खजाने छिपे हैं, लेकिन मैं उनमें से केवल एक ही चाहता हूं," अबानज़र ने कहा. "ज़रा वहां से चिराग लेकर आओ."

"देखो हम अब पहुंच गए," आखिर में चाचा ने कहा. उन्होंने आग जलाई, उस पर कुछ पाउडर फेंका और कुछ अजीब मन्त्र पढ़ा.

चाचा ने कहा, "यह अंगूठी अपने पास रखो. वो तुम्हारी रक्षा करेगी," उन्होंने अलादीन को नीचे धकेलते हुए कहा. अलादीन सोने से भरे चार कमरों से होता हुआ एक फलों से लदे पेड़ों के बगीचे में पहुंचा. वहां के फल, कांच के टुकड़ों की तरह चमक रहे थे.

अलादीन ने चिराग खोजा और उसे अपनी जेब में रखा, फिर उसने कुछ सुंदर फल भी उठाए.

"मुझे चिराग तुरंत सौंप दो," प्रवेश द्वार से अबानज़र चिल्लाया.

अलादीन ने चिराग खोजने में बहुत लंबा समय लिया था. इसलिए अबानज़र को लगा कि कहीं अलादीन ने उसे धोखा तो नहीं दिया था.

इससे पहले कि अलादीन जवाब दे पाता, जोर से ठहाके की आवाज़ आई और सब तरफ स्याह अँधेरा छा गया.

दो जिन्न

अलादीन अब फंस गया था. वहां ठंड, अँधेरा और बहुत डरावना माहौल था. अलादीन ने अपने हाथों को गर्म रखने के लिए रगड़ा.

अचानक, एक राक्षस जैसा आदमी उसके सामने उठ खड़ा हुआ.

"मैं अंगूठी का जिन्न हूं," उसने कहा. "हुक्म दें, मैं आप के लिये क्या कर सकता हूँ?"

"मुझे यहां से तुरंत बाहर निकालो!" अलादीन चिल्लाया. पालक झपकते ही अलादीन ने खुद को अपने घर के बाहर घास पर लेटा हुआ पाया.

वो अपनी मां को सब कुछ बताने के लिए घर में अंदर भागा.

"अबानज़र मेरे चाचा नहीं हैं. उन्होंने जादू-टोने से मुझे मारने की कोशिश की!" उसने रोते हुए कहा.

"छोड़ो, झूठ-मूठ की कहानियां बनाना बंद करो," माँ ने कहा. "अच्छा, तुम क्या खाना चाहोगे? मैं कुछ खाना खरीदने के लिए उस पुराने चिराग को बेचूंगी."

फिर माँ ने चिराग को रगड़कर चमकाना शुरू किया. पर तभी उसमें से एक विशालकाय आदमी तैरता हुए बाहर निकला.

"क्या आपके पास कुछ खाने को है?" अलादीन ने पूछा. "मैं भूख से मर रहा हूं."

पलक झपकते ही चांदी की दो थालियों में उनके सामने शाही भोज हाज़िर हो गया.

भोजन और शराब एक सप्ताह तक चली. जब वो ख़त्म हुई, तो अलादीन ने चांदी की थालियां बेच दीं.

अब अलादीन की ज़िंदगी आसान हो गई. जब अलादीन या उसकी माँ भोजन चाहते, तो वे चिराग रगड़कर जिन्न से खाना मांग लेते.

एक दिन, अलादीन चांदी की थालियां बेचने बाजार गया. तब उसे कुछ जगमगाते हुए गहने दिखे.

"यह तो गुफा वाले कांच के फलों की तरह ही हैं," उसने आश्चर्य से कहा.

फिर वो सीधा भागा-भागा घर गया. जो गहने वो गुफा में से लाया था उसने उन्हें छिपा दिया.

सुल्तान की बेटी

एक दिन सुबह-सुबह सुल्तान का फरमान आया.

"राजकुमारी बद्र-अल-बुदुर आज सार्वजनिक स्नान पर जाएंगी. इसीलिए सभी नागरिक अपने-अपने घरों में ही रहें."

अलादीन आश्चर्यचकित था कि इतनी छोटी सी बात का बतंगड़ क्यों बनाया जा रहा था. अलादीन स्नान-गृह में जाकर छिप गया, ताकि वो राजकुमारी को खुद देख सके.

जब राजकुमारी ने अपना घूंघट उठाया, तो अलादीन लगभग बेहोश हो गया. इससे पहले उसने केवल एक ही महिला का चेहरा देखा था - अपनी माँ का. राजकुमारी बद्र, बेहद सुंदर थी!

फिर आँखों में चमक और चेहरे पर मुस्कान के साथ अलादीन घर वापिस पहुंचा.

"क्या हुआ?" माँ ने उत्सुकतापूर्वक उससे पूछा.

"मुझे सुल्तान की बेटी से प्यार हो गया है," उसने कहा.

मां को हंसी आई, लेकिन अलादीन काफी गंभीर था.

"अगर मैंने बद्र से शादी नहीं की, तो फिर मैं मर जाऊंगा," उसने कहा.

उसने माँ से खुशामद की कि वो सुल्तान के पास जाकर रिश्ते की बात करें.

"सुल्तान को भेंट देने के लिए यह गहने लेती जाओ," उसने कहा.

"सुल्तान कभी भी इस रिश्ते के लिए तैयार नहीं होगा!" माँ ने रोते हुए कहा. लेकिन माँ अपने बेटे को लेकर बड़ी चिंतित थी, इसलिए उससे जो कहा गया उसने वही किया.

सुल्तान एक भव्य महल में रहता था. पहली बार तो सुल्तान ने, अलादीन की माँ की ओर देखा तक नहीं. लेकिन जब वो बार-बार महल में गईं, तो आखिर में सुल्तान ने उनसे बात की.

माँ ने सुल्तान को बताया कि उसके बेटे को राजकुमारी बद्र से बेहद प्यार था.

"वैसे हम आपकी महानता के योग्य नहीं हैं," माँ ने कहा. “लेकिन यह छोटा सा उपहार ज़रूर स्वीकार करें."

"हाँ, ... बद्र को एक पति जरूर चाहिए..." सुल्तान ने कहा.

"लेकिन आपने कहा था कि मेरा बेटा, राजकुमारी से शादी कर सकता है," सुल्तान के पास खड़े एक पतले आदमी ने कहा.

वह व्यक्ति एक शक्तिशाली सूबेदार और वज़ीर था. उसने सुल्तान के कान में कुछ फुसफुसाया, फिर सुल्तान ने अलादीन की माँ की ओर रुख किया.

"तुम्हारा बेटा मेरी बेटी से तीन महीने बाद शादी कर सकता है," उन्होंने कहा.

गलत पति

दो महीने बाद, अलादीन की माँ शहर में थी. शहर में हर कोई शाही शादी की बात कर रहा था.

"राजकुमारी, आज वज़ीर के बेटे से शादी करेगी!" एक आदमी चिल्ला रहा था.

बुरी खबर बताने के लिए अलादीन की माँ घर पहुँची. अलादीन बहुत परेशान हुआ. अंत में उसे चिराग में छिपे जिन्न की याद आई.

अलादीन ने जिन्न को आदेश दिया कि वो नए दंपत्ति को जाकर उस रात परेशान करे.

आधी रात को, जिन्न राजकुमारी बद्र को अलादीन के घर ले आया और उसने वज़ीर के बेटे को अंधेरे में, ठंडी सड़क पर छोड़ दिया.

"तुम मेरे साथ सुरक्षित हो," अलादीन ने धीरे से कहा.

सुबह होने से पहले, जिन्न ने राजकुमारी बद्र और वज़ीर के बेटे को उनके कमरे में लौटाया.

"क्या कुछ गड़बड़ है?'' बद्र के माता-पिता ने नाश्ते के समय पूछा.

राजकुमारी बद्र चुप रही. उस शाम, वज़ीर के बेटे ने एक शांतिपूर्ण रात की नींद की प्रार्थना की, लेकिन आधी रात को जिन्न फिर आया ...

सड़क पर एक और ठंडी रात बिताने के बाद वज़ीर के बेटे से और ज़्यादा नहीं झेला गया.

"माफ़ी चाहता हूँ, सुल्तान," उसने सुल्तान से कहा. "आपकी बेटी बहुत सुन्दर है लेकिन मैं इस भयानक बुरे सपने का और अधिक सामना नहीं कर सकता हूँ."

"ठीक है, शायद यह शादी होनी ही नहीं चाहिए थी," सुल्तान ने कहा और फिर उन्होंने वो शादी रद्द कर दी.

अलादीन की शादी हुई

कुछ समय बाद अलादीन की माँ सुल्तान को देखने के लिए वापस गईं.

"अपने बेटे से मुझे और गहने भेजने को कहो," सुल्तान ने कहा.

"मुझे चालीस थाली गहने चाहिए," सुल्तान ने कहा, "जिन्हे रेशम के कपड़े पहनें अस्सी सेवक मेरे महल में लाएं. तभी अलादीन, बद्र से शादी कर सकता है."

जिन्न ने उसका आसानी से इंतज़ाम कर दिया. एक घंटे में, एक लम्बी बारात का जुलूस महल की ओर जा रहा था.

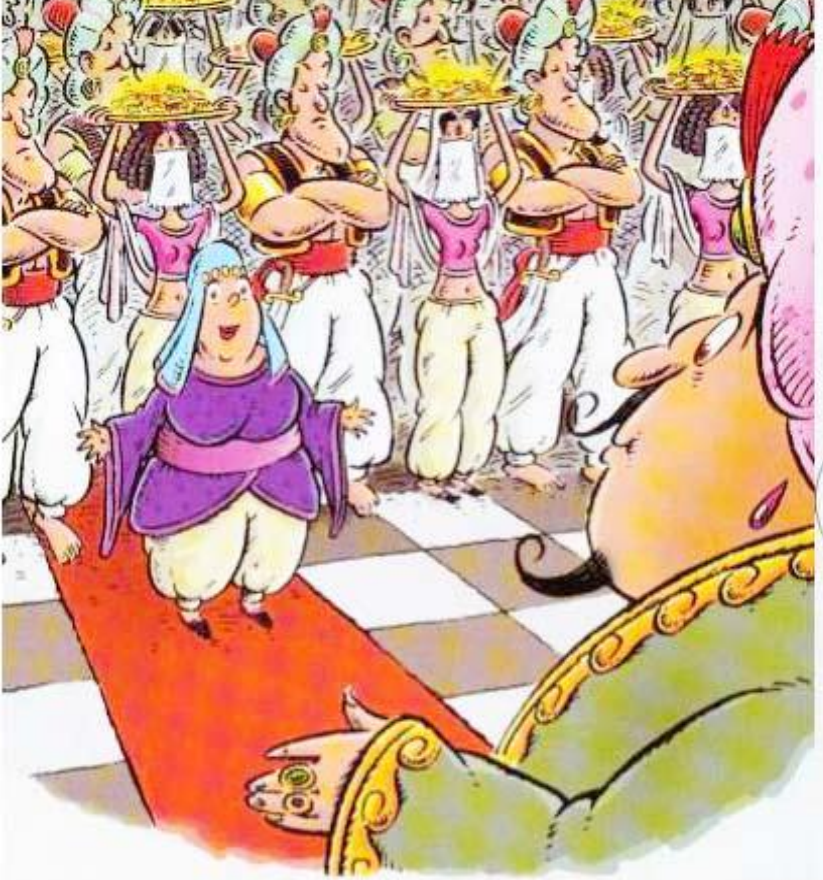

वो सब देखकर सुल्तान को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ.

"अपने बेटे से कहो कि वो मेरी बेटी से तुरंत शादी कर सकता है!" सुल्तान ने अलादीन की माँ से कहा.

लेकिन शादी से पहले अलादीन, बद्र के लिए एक सुन्दर घर चाहता था. उसने जिन्न को अपने सपनों के महल का वर्णन बताया और जिन्न ने उसे रातोंरात बनाकर तैयार कर दिया.

फिर अलादीन बेहतरीन कपड़े पहने सुल्तान के महल में पहुंचा. शादी का दिन संगीत और नृत्य के साथ शुरू हुआ, फिर दावत और आतिशबाजी के साथ समाप्त हुआ.

उसी शाम, बद्र अपने नए घर में आई. वो बहुत खुश थी. अलादीन एक सुंदर आदमी था और उनका महल दुनिया में सबसे अच्छा था.

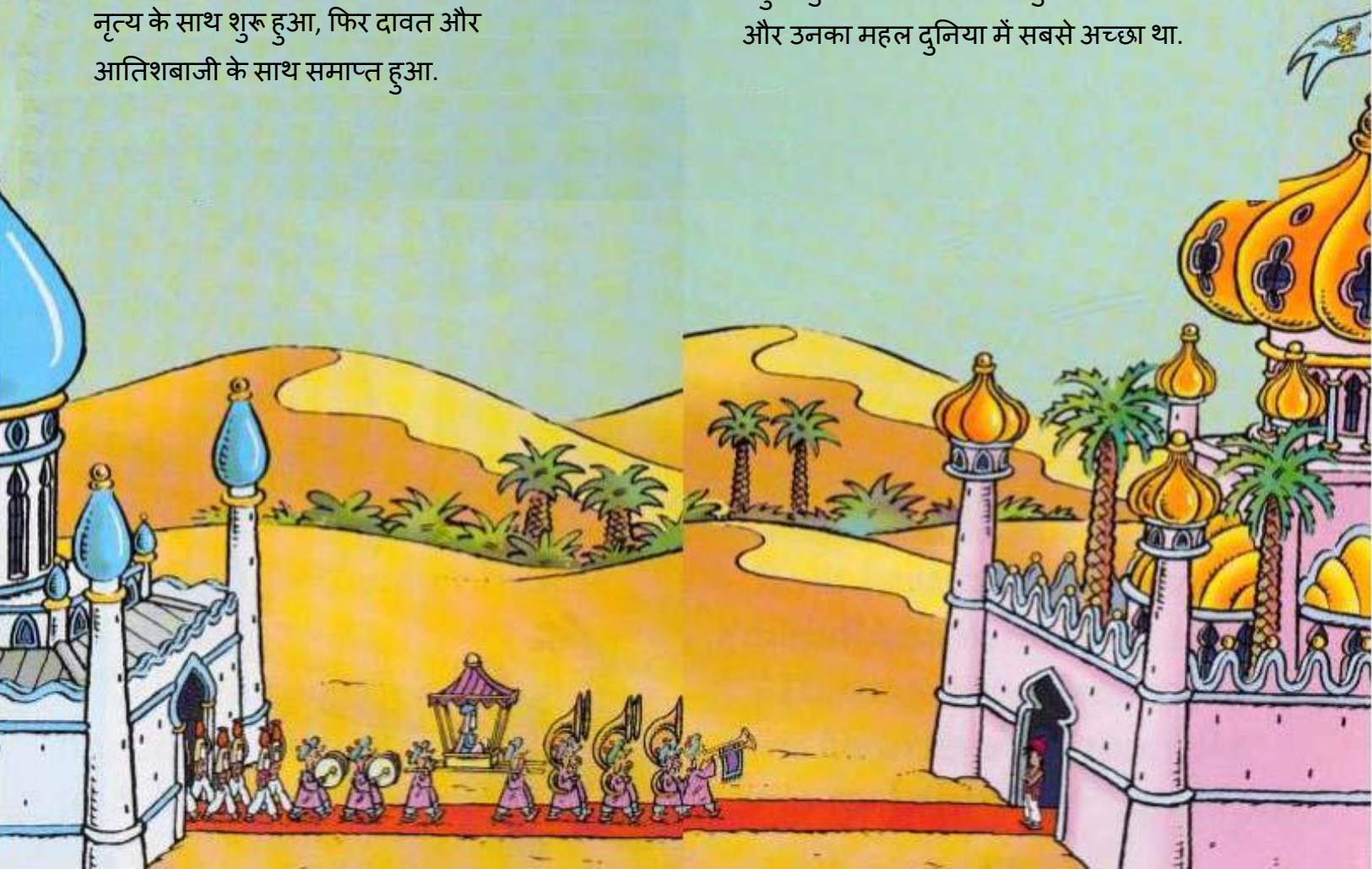

अबानज़र की वापसी

रेगिस्तान में बहुत दूर, अबानज़र को अलादीन की अच्छी तकदीर की खबर मिली.

"वो ज़रूर जादुई चिराग लेकर भाग गया होगा," अबानज़र ने गुस्से में कहा.

अबानज़र जादुई चिराग पाने के लिए अलादीन के शहर गया.

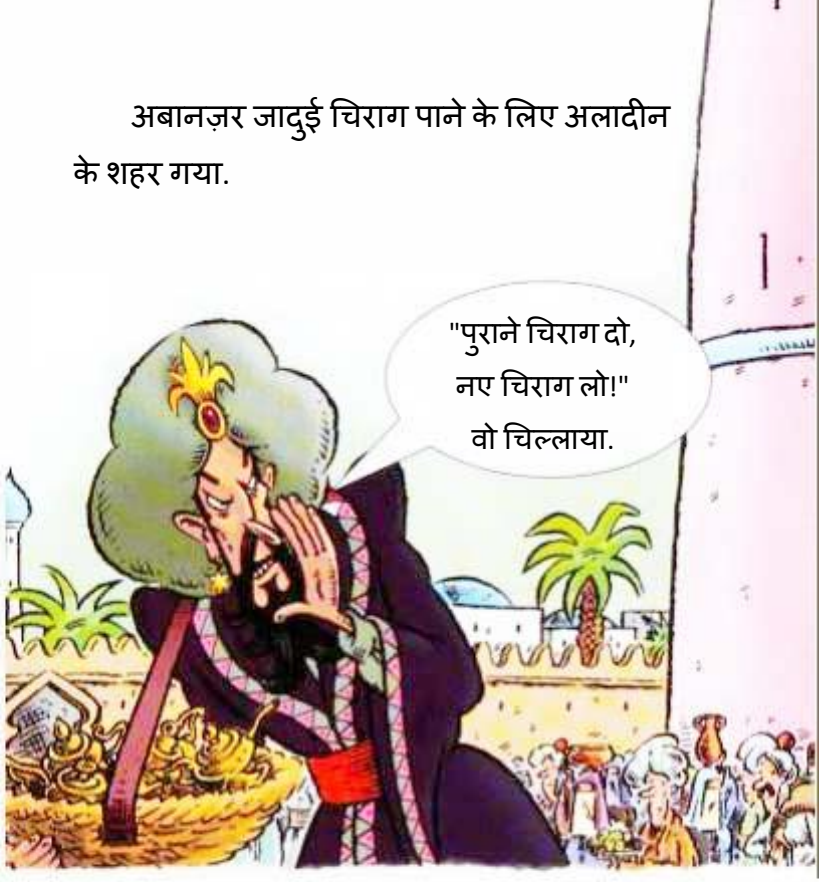

बद्र ने अपने महल में से फेरीवाले की चीख-पुकार सुनी.

"मुझे वो ठीक लगता है," बद्र ने सोचा.
उसे फेरीवाले को देने के लिए एक पुराना चिराग मिला.

चिराग लेने के बाद अबानज़र एक शांत कोने में गया और उसने चिराग को रगड़ा.

"मै आप के लिये क्या कर सकता हूँ?" जिन्न ने पूछा.

"मुझे, महल और राजकुमारी को तुरंत रेगिस्तान के बीच में ले जाओ," अबानज़र ने कहा.

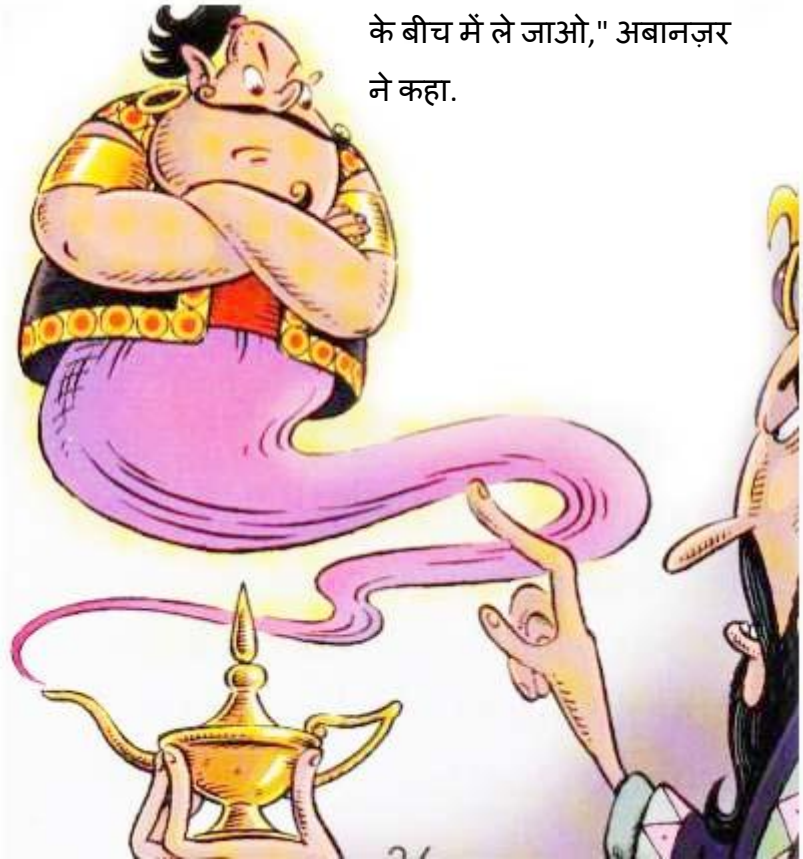

अगले दिन सुबह जब सुल्तान ने अपनी खिड़की के बाहर देखा तो वो लगभग बेहोश हो गया.

"मेरी बेटी का महल गायब है!" उसने कहा.

उसे लगा कि अलादीन ने उसे धोखा दिया है. फिर सुल्तान ने कुछ सैनिकों को अलादीन को गिरफ्तार करने के लिए भेजा.

तभी अलादीन शिकार से वापस लौटा. उसे वहां बस एक सैनिकों की टुकड़ी दिखी. उसका महल गायब था. वो भी सुल्तान की तरह ही हैरान था.

"चिंता न करें, मैं आपकी बेटी ढूँढकर ही चैन लूँगा," उसने सुल्तान से वादा किया.

अलादीन ने निराशा में अपने दोनों हाथ एक-साथ जकड़े और तभी अंगूठी का जिन्न प्रकट हुआ.

"ओह! मैं तुम्हारे बारे में बिल्कुल भूल ही गया था!" अलादीन ने कहा. "कृपया मेरी मदद करो."

"मैं बद्र को आपके पास नहीं ला सकता हूँ," जिन्न ने जवाब दिया, "लेकिन मैं आपको बद्र के पास ले जा सकता हूं."

कुछ समय बाद अलादीन बद्र की खिड़की के नीचे खड़ा था.

"चिंता मत करो!" अलादीन ने कहा. "मैंने एक योजना बनाई है. आज रात तुम उस दुष्ट के साथ खाना खाने के लिए राज़ी होना. मैं तुम्हें कुछ जहर दूंगा जो तुम उसकी शराब में डाल देना."

अबानज़र, बद्र को निहारने में व्यस्त था. उसने शराब में मिला जहर नहीं देखा. एक घूंट पीने के बाद ही वो जमीन पर गिरकर मर गया.

फिर अलादीन ने महल में से अपने चिराग को खोज निकाला. कुछ समय बाद अलादीन और बद्र अपने घर में थे.

दुष्ट भाई

लेकिन वे अभी भी सुरक्षित नहीं थे. अबानज़र का एक दुष्ट भाई था और वो उनसे बदला लेना चाहता था.

भाई ने एक पवित्र महिला फातिमा के कपड़े पहने. वो अलादीन के महल के बाहर खड़े होकर लोगों के रोगों को ठीक करने का नाटक करने लगा.

फातिमा को देखकर बद्र बहुत उत्साहित हुई और उसने उसे अंदर बुलाया.

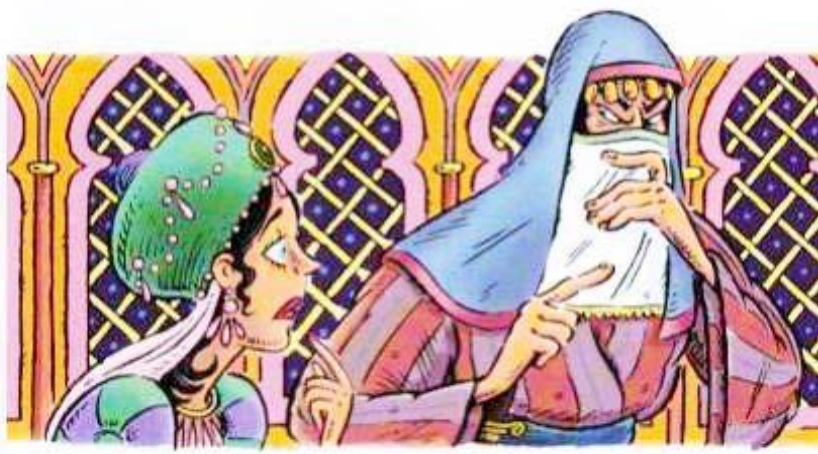

"कितना सुंदर हॉल है," नकली फातिमा ने कहा. "लेकिन अगर आप गुंबद से एक रॉक (दैवीय पक्षी) का अंडा लटकातीं तो वो और भी सुन्दर लगता."

रॉक एक विशाल पक्षी था जो विशाल सफेद अंडे देता था. बद्र को फातिमा का सुझाव पसंद आया और उसने उसके बारे में अलादीन से पूछा.

"ठीक है," अलादीन ने कहा, और उसने चिराग के जिन्न को बुलाया.

''उसके अलावा और कुछ भी!'' जिन्न ने रोते हुए कहा. ''अगर आप रॉक का अंडा मांगेंगे तो मुझे आपको मारना होगा!''

"लेकिन मुझे पता है कि यह विचार आपका नहीं है," जिन्न ने आगे कहा. "फातिमा, भेष बदल कर आई है. असल में वो अबानज़र का भाई है. वो तुम्हें मारना चाहता है!"

अलादीन हैरान हुआ. अब उसे जल्दी ही कुछ करना होगा.

अलादीन ने फातिमा को अपना सिरदर्द ठीक करने को कहा. जैसे ही अबानज़र का दुष्ट भाई अलादीन के करीब आया, अलादीन ने उसे अपने खंजर से मार डाला.

अब अलादीन और बद्र को परेशान करने वाला और कोई नहीं बचा था. अब अलादीन और बद्र सुरक्षित थे.

समाप्त

कालांतर में अलादीन सुल्तान बना और उसकी माँ दादी बनी. उनके पास वो सबकुछ था जिसकी वे इच्छा कर सकते थे, इसलिए उन्होंने जादुई चिराग और अंगूठी को एक दराज में छोड़ दिया. पर क्या पता ... उनमें अभी भी जिन्न हो सकते हैं.